RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

इतिहास लेखन की सल्तनतकालीन परम्परा

डॉ सुनिता सिन्हा

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

प्राचीन भारतीयों की इतिहास लेखन में कोई रूचि नहीं थी। उनके विद्वान धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक अध्ययनों पर अधिक ध्यान देते थे। भारतीय इतिहास–लेखन वस्तुतः एक इस्लामी विरासत है। मुसलमान उलेमा तथा इतिहासकारों ने ही इतिहास के प्रति जागरूकता दिखाई एवं दिन प्रतिदिन की घटनाओं तथा राजनीतिक हलचलों का विस्तृत वर्णन लिखा। ऐसा करने में वस्तुतः उनका प्राथमिक उद्देश्य इस्लाम का गौरव कायम करना था। वे किसी अमीर उल मोमनीन के सैन्य कारामातों पर गर्व का अनुभव करते थे, जो काफिरों को इस्लाम में धर्मांतरित कर 'दारूल हरब' को 'दारूल इस्लाम' में परिवर्तित करने का प्रयास करता था। वे इसी दुनिया के व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी भौतिक सम्पत्तियों को महत्ता दी एवं अपने सांसरिक लाभों को बढ़ाने का कठोर प्रयत्न किया। उनकी इस सहज वृत्ति ने ही उन्हें अपने भूत तथा वर्तमान के घटनाक्रमों को लिपिबद्ध करने में सहायता दी।

मुस्लिम शहंशाह इतिहास लेखकों, राजनामचा रखनेवालों एवं दरबारी इतिहासकारों को नियुक्त करते थे जो उनके क्रियाकलापों का विपुल हिसाब–किताब प्रायः अतिशयोक्तिपूर्ण होता था। इस्लामी जगत के वंशानुगत, क्षेत्रीय या सामान्य इतिहासों पर विद्वानों ने पुस्तकें लिखीं तथा कवियों ने मसनवी बनाये। लेखकों ने बड़े तथा छोटे लोगों की जीवन संबंधी बातों का वर्णन किया एवं ऐतिहासिक उपाख्यानों तथा निजी अथवा सार्वजनिक घटनाक्रमों का विवरण दिया। उन्होंने केवल साहित्यिक प्रसिद्धि, पुरस्कार या अपने संरक्षकों के मानसिक उन्नति के लिए ही नहीं, अपितु अपनी बौद्धिक क्षुधा एवं अपने अवलोकनों एवं अनुभवों को लिखने की अपनी आन्तरिक ललक को संतुष्ट करने के लिए भी लिखा। शासनों तथा अमीरों में शिक्षित लोगों ने भी अपनी स्मृतियाँ निजी दैनिकी लिखी। इस प्रकार, सल्तनत काल में इतिहास–लेखन अपने पूर्ण रूप में प्रकीर्णित हुआ। इस काल ने बड़ी संख्या में पेशेवर इतिहासकारों, इतिहास–लेखकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जो भावी पीढ़ियों के लिए ऐविहासिक साहित्य का एक विपुल भंडार छोड़ गए।

मुस्लिम इतिहास–लेखकों के प्रारम्भिक साहित्यिक आलेख अरबी में मिलते हैं, जो कुरान तथा अरब उच्च वर्ग की भाषा थी। फारस में इस्लाम की स्थापना के साथ ही मुस्लिम जगत में फारसी राष्ट्रीयता पुनर्जीवित हुई। इसके परिणामस्वरूप तुर्की राजवंशों द्वारा, जो फारसी सम्राटों के दास अधिकारियों द्वारा स्थापित किए गये थे, फारसी भाषा एवं संस्कृति अपना ली गई। फलतः, भारत में तुर्की शासन की स्थापना के साथ–साथ फारसी परम्परा के इतिहास–लेखन की भी जड़े जम गयीं। अतः इनमें से अधिकांश साहित्यिक आलेख फारसी में पाये जाते हैं यद्यपि कुछ कृतियाँ अरबी तथा अन्य भाषाओं जैसे तुर्की में भी हमें मिली हैं। इन दिनों हम अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में कई महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद पाते हैं। इसके साथ ही, विद्वानों द्वारा अन्य कृतियों का भी अनुवाद एवं सम्पादन किया जा रहा है।

प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत के अधिकांश इतिहास–लेखक विदेशी वंशवली के तुर्क या अफगान थे जिनकी प्राथमिक रूचि अपने सैन्य नेताओं के सैनिक एवं राजनीतिक कारनामों तथा दिल्ली के सुल्तान या अन्य क्षेत्रीय राज्यों के दरबारों के घटनाक्रमों को आलेखबद्ध करना था। उन्होंने अधिकांशतः उन्हीं घटनाक्रमों का वर्णन किया जिनका सामान्य जनता से कोई संबंध नहीं था। देश की सामाजिक–आर्थिक अवस्थाओं पर उन्होंने शायद ही कभी ध्यान दिया। शिक्षा की मध्यकालीन प्रणाली 'धर्मषास्त्र उन्मुख' होने के कारण अधिकतर लेखक ज्ञान की प्रत्येक शाखा की उत्पत्ति कुरान तथा पैगंबर मुहम्मद से मानते थे। अतः उनकी सामग्री को उपयोग में लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन व्यक्तियों की मनःस्थिति को स्पष्ट रूप से समझा जाए, जिन्होंने इसे लिखा। वे वैज्ञानिक इतिहासकार हीं थे, अतः उनकी कृतियों को सावधानी एवं ध्यान के साथ देखा जाना चाहिए। उनके ब्योरों को ऐतिहासिक तथ्य के रूप में मानने से पूर्व उन्हें आधुनिक अनुसंधान की विधियों द्वारा परखा तथा प्रमाणित किया जाना चाहिए। निस्संदेह सैन्य एवं राजनीतिक इतिहास इन्हीं साहित्यिक स्त्रोतों में सुरक्षित है। सिक्कों के प्रमाण, स्मारक तथा कला के प्रतिनिधि प्रतिरूपों का अध्ययन भी उस काल के इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक है यद्यपि ऐसे स्त्रोत सामान्यतया द्वितीयक महत्ता के हैं जो साहित्यिक प्रमाणों को सत्यापित या पुष्ट करते हैं।

'चाचनामा' अभी तक खोज किया गया सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्त्रोत है, जो 711–12 में अरब आक्रमण के समय सिन्ध के देशी शासक वंश के इतिहास पर प्रकाश डालता है। यह पुस्तक एक गुमनाम लेखक के द्वारा अरबी में लिखी गई, जो संभवतः मुहम्मद बिन कासिम के खेमे का एक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अनुयायी होगा तथा इसका नाम 'चाचनामा' शांसक गृह के संस्थापक के नाम पर पड़ा होगा। यह सिन्ध के शूद्र वंश का एक संक्षिप्त ब्योरा देता है, जिसके अंतिम शासक राय सहासी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात राजगद्दी को उसके एक ब्राह्मण मंत्री चाच, जो सिलैज का पुत्र था, ने सातवीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में हथिया लिया। चाच ने राजत्व के लिए अपने दावे को मजबूत करने के लिए अपने संरक्षक की विधवा रानी 'सुब्बन देव' (देवी) से विवाह कर लिया। उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दाहिर 708 ई0 में गद्दी पर बैठा। उसी के काल में सिन्ध पर अरबों का आक्रमण हुआ तथा इस संघर्ष में वह अपने सम्पूर्ण परिवारजनों सहित मर मिटा। चाचनामा का फारसी में अनुवाद मुहम्मद अली बिन अबु बक्र कुफी के द्वारा नसीरूद्दीन कुबाचा के काल में किया गया, जो मुहम्मद गोरी का एक तुर्की दास अधिकारी था, जिसे उसके मालिक द्वारा मुल्तान तथा उच्च (सिन्ध) का गवर्नर नियुक्त किया गया था।

अलबेरूनी :–

अलबेरूनी (972–1048 ई0), प्रथम महत्त्पूर्ण मुस्लिम भारतविद (इण्डोलॉजिस्ट), ग्यारहवीं शताब्दी के महानतम बुद्धिजीवियों में से एक थे। उनका जन्म खीवा राज्य, जो उस समय ख्वारिज्म कहलाता था, के इरानी परिवार में हुआ। वे 'सर्वज्ञानसंपन्न' व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने समय के 'विज्ञान एवं साहित्य' के विविध विषयों में विशिष्टता प्राप्त की। वे धर्मशास्त्री, दार्शनिक, तर्कज्ञाता, गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, ज्योतिषी, भूगोलशास्त्री एवं चिकित्सक सभी थे। यद्यपि उनका पालन–पोषण कठिनाई में हुआ, तथापि अलबेरूनी ने भौतिक सुविधाओं एवं जीवन के ऐशो–आराम के प्रति कभी कमजोरी प्रदर्शित नहीं की। वे मामुनी वंश के ख्वारिज्म शाह के राजनैतिक सलाहकार थे। 1017 ई0 में जब महमूद गजनी ने उनके अपने देश पर आक्रमण कर उसे जीत लिया, अलबेरूनी भी विजितों में से एक थे। वे तब तक 'मुनुज्जिम'–ज्योतिषी एवं खगोलशास्त्री के रूप में प्रसिद्धि पा चुके थे। ये यूनानी तथा भारतीय प्रणालियों के अच्छे ज्ञाता मसूद के शासन के सन्दर्भ में एक एक मौलिक तथा ताजा इतिहास देते हैं। वे सुल्तान के दरबार की लिखित तस्वीर एवं उसके अमीरों का चरित्र चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

हसन निजामी की पुस्तक 'ताजुल मासीर' यानी 'कारनामों का ताज' मुख्यतया कुतबुद्दीन ऐबक के इतिहास का वर्णन करती है। नियाजी खुरासान के एक आप्रवासी थे। उनका जन्म निशापुर में एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में हुआ था। वे लिखते हैं कि मैंने 'कभी भी विदेश यात्रा का स्वप्न नहीं देखा था', जब तक कि अपने देश की परेशानियों ने 'उन्हें कहीं बाकर जाकर एक आवास देखने को बाध्य नहीं किया'। वे गजनी आए, सुल्तान मुहम्मद गोरी के दरबारियों से जान–पहचान की तथा शीघ्र ही दिल्ली चले आए। वे कुतबुद्दीन ऐबक के अधीन सेवारत हो गए, जो उत्तरी भारत में मुहम्मद गोरी का वायसराय था। 1205 ई. में ऐबक के आदेश पर हसन नियाजी ने इस पुस्तक को लिखना प्रारम्भ किया। मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात, ऐबक उत्तरी भारत का स्वतन्त्र शासक हो गया। इससे लेखन की सामाजिक प्रतिष्ठा में स्वाभाविक बढ़ोत्तरी हुई तथा उसके आधिकारिक कार्य का मूल्य भी बढ़ा। पुस्तक का प्रारम्भ 1191–92 में एक जख्मी शेर के रूप में मुहम्मद गोरी के भारत आक्रमण से होता है, जब वह पृथ्वीराज तृतीय, जो दिल्ली तथा अजमेर का चौहान शासक था, के हाथों पूर्व पराजय का बदला लेने के लिए तराईन का द्वितीय युद्ध लड़ता है। लेखक ऐब के 1192 से 1206 ई. तक के सैन्य कारनामों का विस्तृत वर्णन करता है, यद्यपि स्वतंत्र शासक (1206–10 ई.) के रूप में उसकी उपलब्धियों का संक्षिप्त वर्णन एक पृथक अध्याय में है। लेखक आराम शाह का जिक्र नहीं करता है, किन्तु इल्तुतमिशन के शासन के 1217 ई. तक की घटनाओं का वर्णन करता है।

मिन्हाज उस सिराज मध्य एशिया के एक कुलीन परिवार से संबंधित थे। वे अपनी माता की तरफ से गजनी के सुल्तान महमूद के राजघराने से सम्बद्ध थे। उनके पिता मुहम्मद गोरी के अधीन काजी या आध्यात्मिक गुरू के रूप में 'हिन्दुस्तानी सेना' से संबंद्ध थे। मिन्हाज स्वयं भी इस्लामी धर्मशास्त्र (मंकूल) तथा विधि–शास्त्र (फिख) के एक प्रतिष्ठित विद्वान थे। 1227 ई. में नसीरूद्दीन कुबाचा, जो उस समय दिल्ली के विरूद्ध विद्रोह कर चुका था, द्वारा उन्हें उच्च में फिरोजी मदरसा का प्राचार्य नियुक्त किया गया। अगले ही वर्ष उच्च को शाही सेना ने पुनः प्राप्त कर लिया, जिसका नेतृत्व सुल्तान इल्तुतमिश ने किया। मिन्हाज उस सिराज उसके साथ दिल्ली आए, जहाँ उन्हें सुल्तान द्वारा संरक्षण मिला। चार–पाँच दीवान (पद्य रचनाओं का संकलन), करीब एक दर्जन उपन्यास, निजामुद्दीन के सॅफी दर्शन एवं उपदेशों के चार संग्रह के अतिरिक्त, पद्य तथा गद्य में, धर्मशास्त्र, दर्शन, कला, साहित्यिक आलोचना तथा कई सांस्कृतिक भावों पर कई टिप्पणियाँ। वे प्रथम मुस्लिम कवि थे, जिन्होंने हिन्दी शब्दों में भरपूर उपयोग किया तथा भारतीय पद्यों के प्रतीकों एंव भावों को अपनाया।

इब्न बतूता (1304–78 ई.) का उनमें प्रमुख स्थान है। वह एक अरब यात्री तथा मोरक्कों का अभियानकर्त्ता था। इस्लामी धर्मशास्त्र तथा विधिशास्त्र के विशेषज्ञ इब्न बतूता ने जीवन–पर्यन्त विश्व भ्रमण करने के लिए 1325 ई. में घर छोड़ दिया। उत्तरी अफ्रीका तथा अरब प्रायद्वीप के देशों को पार करता हुआ। 1333 ई. में वह सिन्ध पहुँचा, जहाँ से वह दिल्ली आया। उसे मुहम्मद बिन तुगलक का संरक्षण प्राप्त हुआ, जिसने उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया। उसने इस पद पर आठ वर्षों तक कार्य किया, किन्तु दुर्भाग्यवश उसके विरूद्ध कुछ भ्रष्टाचार तथा बेईमानी के इल्जाम लगे, जिसके कारण इब्न बतूता को जेल हो गयी। किन्तु, सुल्तान से व्यक्तिगत अनुरोध करने पर वह कैद से छोड़ दिया गया। सुल्तान ने 1342 ई. में इब्न बतूता को एक राजनयिक दल का प्रधान बनाकर चीन भेज दिया। मार्ग में जलपोत के दुर्घटनाग्रस्त हो

जाने के कारण उसे अपना कार्य पूरा किये बगैर ही दिल्ली लौटना पड़ा। तत्पश्चात, इब्न बतूता ने दिल्ली को अलविदा कह दिया तथा अपनी यात्रा पुनः प्रारम्भ की। मालदीव द्वीपसमूह तथा श्रीलंका होता हुआ वह पुनः दक्षिण भारत लौट गया तथा कुछ दिनों तक मदुरा में रूका। 1349 ई. में अपने घर लौटने से पूर्व वह यहां से हज यात्रा के लिए मक्का गया। इब्न बतूता का मोरक्कों के शासक तथा लोगों ने भव्य स्वागत किया। इस समय तक वह दार्शनिक एवं संत के रूप में विश्व प्रसिद्धि पा चुका था। उसे अपने देशवासियों का प्रेम एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हुई तथा पोप के सचिव (पोगियो ब्रेसियोलिनी) द्वारा लैटिन में आलेखबद्ध किया गया, जो निकोलो कॉण्टी का यात्रा–वृतान्त बन गया। उसने मालाबार के तट से होकर समुद्री यात्रा की थी तथा वह 1420 में दक्कन के आन्तरिक भाग में पहुँचा था। उसका वृतान्त विजयनगर के राजकीय दरबार की कुछ झलकियाँ देता है तथा व्यापक रूप से दक्षिण भारत की सामाजिक एवं आर्थिक अवस्था पर प्रकाश डालता है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची :–

1. 'द हिस्ट्री ऑफ इंडिया ऐज टोल्ड बाय इट्स ओन हिस्टोरियंस : द मुहम्मडन पिरियड'; 8 खंड; लंदन, 1886–77
2. भारतीय पुनर्मुद्रण, एस.चंद, 1964; कियामुद्दीन अहमद द्वारा संक्षेपण; नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत, 1984.
3. मुहीब्बुल हसन एवं मुहम्मद मुजीब (संपादित), 'हिस्टोरियंस ऑव मेडिएवल इंडिया' ; मीनाक्षी, 1968.
4. जदुनाथ सरकार मुहीब्बुल हसन लिखित 'हिस्टोरियंस ऑव मेडिएवल इंडिया'
5. एम. हिदायत हुसैन द्वारा संपादित, 'बिब इंडिका'; कलकत्ता, 1939

RRIJM 2015, All Rights Reserved